नाम - डॉ. प्रदीप कुमार राय
एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीतिशास्त्र विभाग,
रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम
विषय - राजनीतिशास्त्र
कक्षा - बी.ए. (प्रतिष्ठा) खण्ड - 01
सत्र - 2019-20
पेपर सं० - 01
अध्याय - 28

दिनांक :- 04. 05. 2020

टॉपिक - व्यक्तिवाद के समर्थन का आधार

व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा कार्य में अहस्तक्षेप के विचारधारा से संबंधित व्यक्तिवादी चिंतन को निम्न आधारों पर समर्थन किया गया है -

(i) नैतिक तर्क - इस आधार पर व्यक्तिवाद के प्रखर समर्थक मिल हैं। उनके अनुसार व्यक्तिगत स्वतंत्रता की स्थिति में ही मनुष्य अपना चारित्रिक एवं विविध पक्षों का संतुलित विकास कर सकता है। मनुष्य की आत्मनिर्भरता ताकि वह कोई नई शुरुआत कर सके इसके लिये अहस्तक्षेप का माहौल आवश्यक है। मिल के अनुसार, अपनी इच्छानुसार कार्य करके ही मनुष्य चारित्रिक समुन्नता एवं प्रगति प्राप्त कर सकता है।

(2.) आर्थिक तर्क – आर्थिक तर्क के आधार पर व्यक्तिवाद के समर्थकों में स्वीरतने, एडम स्मिथ, माल्थस, रिकार्डो आदि आते हैं। इसमें इस तथ्य पर बल दिया गया है कि 'स्वतंत्र प्रतियोगिता और निजी साहस' (open competition and free enterprise) की अवस्था में ही उत्पादन वृद्धि, आर्थिक कल्याण और कार्य कुशलता में बढ़ोतरी होती है।

एडम स्मिथ के अनुसार, व्यापार एवं उद्योग को स्वतंत्र के प्रतियोगिता एवं निजी हाथों में रखने की अवस्था में ही इनका अधिकतम विकास हो सकता है। वेतन, मूल्य आदि नकारात्मक हो सकते हैं। राज्य का कार्य केवल छल और विश्वासघात से लोगों की रक्षा करनी चाहिये।

(3.) प्राणी वैज्ञानिक तर्क – इसके प्रतिपादक हर्बर्ट स्पेन्सर के अनुसार प्रकृति के में अनवरत रूप से 'जीवन संघर्ष' और 'योग्यतम की विजय' की प्रक्रिया जारी है। इसके अनुसार विकास और प्रगति का स्वाभाविक मार्ग है यह है कि दुर्बल, अयोग्य

और अशक्त व्यक्तियों के जीवन का अंत हो जाये ताकि उनपर किये जानेवाले साधनों का प्रयोग समर्थ और योग्य व्यक्तियों द्वारा किया जा सके ताकि संपूर्ण मानव जाति को लाभ पहुँचे।

(4.) राज्य की अयोग्यता का तर्क– व्यक्तिवादियों के अनुसार राज्य आर्थिक, सामाजिक आदि कार्यों की योग्यता एवं सामर्थ्य का अभाव रहता है। कर्मचारीगण भी राजकीय कार्यों में निजी हित न रहने के कारण उसकी सफलता में कोई रुचि नहीं लेते। नौकरशाही की सारी बुराईयां आर्थिक क्षेत्र में प्रवेश कर जाती हैं।

(5.) मनोवैज्ञानिक तर्क– इस आधार पर कहा जाता है कि संपत्ति के स्वामित्व को बढ़ाने की होड़ से व्यक्ति अधिकाधिक काम एवं प्रतिभा को प्रदर्शित करता है ऐसी स्थिति में राज्य द्वारा असमान समता और परिश्रमी वाले व्यक्तियों में धन को समान वितरण करने से मनुष्यों की प्रेरक शक्ति समाप्त हो सकती है। आधुनिक सभ्यता के विकास का इतिहास भी प्रतिस्पर्धा और प्रतिभा की बदौलत हुआ है।

Scanned with CamScanner

(6.) अनुभव का तर्क - ऐतिहासिक तौर पर यह देखा गया है कि राज्य द्वारा वस्तुओं के मूल्य, मजदूरी की दर; आयात-निर्यात पर रोक की व्यवस्था से नकारात्मक परिणाम सिद्ध हुये हैं।

Buckle के अनुसार,...

व्यर्थ के प्रतिबंधों द्वारा व्यापार की अवनति और विकास प्रभावित होता है।

उपर्युक्त तर्कों का आधार यही है कि राज्य द्वारा व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक आदि क्षेत्र में अनावश्यक हस्तक्षेप का प्रभाव नकारात्मक होता है।

Scanned with CamScanner